दिनांक- 15.4.24
पृष्ठ - 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य पाठ-2 'हार की जीत' (भाग-2)
लेखक - सुदर्शन
पुस्तक- नवतरंग भाग-7

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

बच्चो! पाठ-2 'हार की जीत' का यह अगला भाग पृष्ठ-9 पर दिया गया है।

बच्चो! पिछले सप्ताह जो कार्य भेजा गया था, उस पिछले भेजे गए कार्य में हमने पढ़ा था कि बाबा भारती अपने घोड़े से बहुत प्यार करते थे। वे अपने घोड़े को प्यार से सुलतान कहकर पुकारते थे। थोड़ी देर के लिए उन्हें ऐसी भ्रांति हो गई थी कि वे सुलतान के बिना नहीं रह सकेंगे। सुलतान की सुंदरता की कीर्ति उस इलाके के डाकू खड्गसिंह के कानों तक भी पहुँची। वह सुलतान को देखने के लिए बेचैन हो गया और उसे देखने की इच्छा से एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा। बातचीत के बीच खड्गसिंह ने सुलतान को देखने की इच्छा प्रकट की। बाबा भारती ने अपना घोड़ा घमंड से दिखाया। उसे देखते ही खड्गसिंह मोहित हो गया और उसे प्राप्त करने के बारे में सोचने लगा। उसने बाबाजी को चेतावनी दी कि वह इस घोड़े को आपके पास नहीं रहने देगा। डाकू के मुँह से यह शब्द सुनकर बाबाजी डर गए। उन्हें रात को नींद नहीं आती थी। वे सारी रात सुलतान की रखवाली करते, जागते रहते। कई मास बीत जाने के बाद वह डाकू नहीं आया तो बाबा भारती निश्चिंत हो गए।

बच्चो! एक दिन संध्या समय बाबा भारती अपने घोड़े पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी। वे अपने घोड़े को देख-देखकर प्रसन्न हो रहे थे। तभी उन्हें एक आवाज़

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-2 'हार की जीत') सुदर्शन

सुनाई दी, " ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।" उसने बाबाजी को बताया कि वह एक अपाहिज है और उसे वहाँ से तीन मील दूर रामावाला जाना है। बाबाजी आप दया कीजिए और मुझे अपने घोड़े पर चढ़ा लीजिए। बाबाजी ने उससे पूछा, "वहाँ तुम्हारा कौन है?" अपाहिज ने बताया कि दुर्गादत्त वैद्य का मैं सौतेला भाई हूँ। बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे। सहसा (अचानक) उन्हें एक झटका लगा और लगाम उनके हाथ से झटके के साथ ही छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि बाबा भारती जिसे अपाहिज समझ रहे थे, वह डाकू खड्गसिंह था। वह घोड़े को दौड़ाए ले जा रहा था।

बच्चो! अब मैं आपको कुछ कठिन शब्दों के अर्थ बताऊँगी। सब बच्चे इन शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
खूँखार	हिंसक, भयानक	चैन	शांति
घटा	बादल	छवि	सौंदर्य
अधीरता	बेचैनी, व्याकुलता	उपस्थित	मौजूद
प्रतिक्षण	हर घड़ी, निरंतर	कराह	दर्द भरी आवाज़
अपाहिज	अपंग, विकलांग		

बच्चो! अब हम पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं। जब खड्गसिंह ने बाबाजी से घोड़ा छीन लिया तब बाबा भारती के मुँह से चीख निकल गई। कुछ समय चुप रहने के बाद वे कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, "ज़रा ठहर जाओ।"

खड्गसिंह बाबाजी की आवाज़ सुनकर रुक गया और बोला, "बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।"

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

दिनांक- 15.4.24
पृष्ठ-3

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-2 'हार की जीत') सुदर्शन

बाबा भारती ने खड्गसिंह से कहा कि वह घोड़े के विषय में बात नहीं करेंगे। परन्तु एक बात अवश्य सुनने के लिए उन्होंने कहा। खड्गसिंह बाबाजी के ये शब्द सुनकर रुक गया। बाबाजी ने कहा, " यह घोड़ा तो तुम्हारा हो चुका। मैं इसे वापस करने के लिए नहीं कहूँगा। मैं तुमसे एक प्रार्थना करता हूँ। इसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"

खड्गसिंह ने बाबा को कहा, " आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, घोड़ा न दूँगा।"

बाबाजी उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।

बच्चो! इस पाठ को हम यहीं समाप्त करते हैं। पाठ का शेष भाग हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे।

शेष भाग अगले सप्ताह - - - -

अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी।

गृहकार्य:- सब बच्चे कराए गए शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे व याद करेंगे। पाठ को उच्च स्वर में पढ़ेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner